2013 (A)

सामाजिक विज्ञान

समय : 2 घंटे 45 मिनट] [पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
3. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. उत्तर देते समय परीक्षार्थी यथासंभव शब्द-सीमा का ध्यान रखें।
5. इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।

सामान्य निर्देश :

1. प्रश्न-पत्र पाँच ग्रुपों में विभाजित है, जिसमें कुल 30 प्रश्न दिए गए हैं। ग्रुप-A और ग्रुप-B में प्रत्येक 20 अंक, ग्रुप-C और ग्रुप-D में प्रत्येक 17 अंक तथा ग्रुप-E में 6 अंक निर्धारित है।
2. 1 अंक के प्रश्न में दो तरह के प्रश्न दिए गए हैं—बहुवैकल्पिक और रिक्त स्थानों की पूर्ति। वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर प्रश्न-पत्र में दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखना है। रिक्त स्थानों की पूर्ति पाठ्य-पुस्तक के अनुसार सही शब्दों द्वारा करना है।
3. 2 अंक के सभी प्रश्न अतिलघु उत्तरीय हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 20 शब्दों में देना है।

A A ONLINE SOLUTION

4. 3 अथवा 4 अंकों के सभी प्रश्न लघु उत्तरीय हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 50 अथवा 60 शब्दों में देना है।
5. 5 अथवा 6 अंकों के सभी प्रश्न दीर्घ उत्तरीय हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 100 अथवा 120 शब्दों में देना है।
6. मानचित्र से संबंधित प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार देना है।

ग्रुप-A : इतिहास (20 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें।

1. जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक कहाँ होता है? 1

(क) ग्राम (ख) कस्बा (ग) नगर (घ) महानगर

2. 'गिरमिटिया मजदूर' बिहार के किस क्षेत्र से भेजे जाते थे? 1

(क) पूर्वी क्षेत्र (ख) पश्चिमी क्षेत्र (ग) उत्तरी क्षेत्र (घ) दक्षिणी क्षेत्र

सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

3. सन् .... में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ।

सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। 1

4. हंगरी की राजधानी .... है।

निम्न प्रश्नों का उत्तर 50 शब्दों में दें। 1

5. बिहार के किसान आंदोलन पर एक टिप्पणी लिखें। 3

6. इटली तथा जर्मनी के एकीकरण में ऑस्ट्रिया की भूमिका क्या थी? 3

7. रूसी क्रांति के किन्हीं दो कारणों का वर्णन करें। 3

निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।

8. हिन्द-चीन उपनिवेश की स्थापना का उद्देश्य क्या था? 7

अथवा, राष्ट्रीय आंदोलन को भारतीय प्रेस ने कैसे प्रभावित किया?

ग्रुप-B : भूगोल (20 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें।

9. काली मृदा का दूसरा नाम क्या है? 1

(क) बलुई मृदा (ख) रेगुर मृदा (ग) लाल मृदा (घ) पर्वतीय मृदा

10. संजय गाँधी जैविक उद्यान किस नगर में स्थित है? 1

(क) राजगीर (ख) बोधगया (ग) बिहार शरीफ (घ) पटना

11. सही शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। 1 × 3 = 3

(i) गुजरात के .... में सौर ऊर्जा का आधुनिक उपक्रम बड़े स्तर पर लगाया जा रहा है।
(ii) बिहार का सबसे बड़ा नगर .... है।
(iii) तल चिह्न की सहायता से किसी स्थान-विशेष की मापी गई ऊँचाई को .... ऊँचाई कहा जाता है।

निम्न प्रश्नों का उत्तर 50 शब्दों में दें।

12. भारतीय कृषि की पाँच प्रमुख विशेषताओं को लिखिए। 3

13. भारत में सड़कों के प्रादेशिक वितरण का वर्णन प्रस्तुत कीजिए। 3

14. सोन अथवा कोसी नदी-घाटी परियोजना के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 3

निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।

15. भारत में लौह एवं इस्पात उद्योग के वितरण का वर्णन करें। 6

A ONLINE SOLUTION

अथवा,

पूरे पृष्ठ पर भारत का एक रेखा मानचित्र बनाइए तथा निम्नलिखित को छायांकित कर नाम अंकित कीजिए—

(क) मुंबई हाई (ख) दुधवा राष्ट्रीय उद्यान

(ग) अभ्रक उत्पादक एक क्षेत्र (घ) चाय उत्पादक एक क्षेत्र

अथवा,

केवल नेत्रहीन छात्रों के लिए—

भारत की नदियों के प्रदूषण के कारणों का वर्णन कीजिए।

ग्रुप-C : लोकतांत्रिक राजनीति (17 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें।

16. निम्नलिखित व्यक्तियों में कौन लोकतंत्र में रंगभेद के विरोधी नहीं थे? 1

(क) मार्टिन लूथर (ख) महात्मा गाँधी

(ग) ओलंपिक धावक टोमी स्मिथ एवं जॉन कॉर्लेस

(घ) जेड॰ गुडी

17. संघ सरकार का उदाहरण है 1

(क) अमेरिका (ख) चीन (ग) ब्रिटेन (घ) इनमें से कोई नहीं

निम्न प्रश्नों का उत्तर 20 शब्दों में दें।

18. ग्राम पंचायतों के प्रमुख अंग कौन-कौन हैं? 2

19. लोकतंत्र जनता का, जनता के द्वारा तथा जनता के लिए शासन है। कैसे? 2

निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।

20. भारत की विधायिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति क्या है? 5

21. लोकतंत्र किस तरह उत्तरदायी एवं वैध सरकार का गठन करता है? 6

अथवा,

किस आधार पर आप कह सकते हैं कि बिहार से शुरू हुआ 'छात्र आंदोलन' का स्वरूप राष्ट्रीय हो गया?

ग्रुप-D : अर्थशास्त्र (17 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें।

22. कौन बीमारू (sick) राज्य नहीं है? 1

(क) बिहार (ख) मध्य प्रदेश (ग) कर्नाटक (घ) उड़ीसा

23. उपभोक्ता अधिकार दिवस कब मनाया जाता है? 1

(क) 17 मार्च (ख) 15 मार्च (ग) 19 अप्रैल (घ) 22 अप्रैल

निम्न प्रश्नों का उत्तर 20 शब्दों में दें।

24. अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं? 2

25. प्रति व्यक्ति आय क्या है? 2

निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।

26. मुद्रा के आर्थिक महत्त्व पर प्रकाश डालें। 5

27. स्वयं-सहायता समूह में महिलाएँ किस प्रकार अपनी भूमिका निभाती हैं? वर्णन करें। 6

अथवा,

वैश्वीकरण का बिहार पर पड़े प्रभावों को बताइए।

A A ONLINE SOLUTION

ग्रुप-E : आपदा प्रबंधन (6 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें।

28. निम्न में से कौन प्राकृतिक आपदा नहीं है? 1

(क) सुनामी (ख) बाढ़ (ग) आतंकवाद (घ) भूकम्प

29. कृषि सुखाड़ होता है 1

(क) जल के अभाव में (ख) मिट्टी के नमी के अभाव में

(ग) मिट्टी के क्षय के कारण (घ) मिट्टी की लवणता के कारण

निम्न प्रश्नों का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें।

30. बिहार में बाढ़ की स्थिति का वर्णन करें। 4

उत्तर (Answers)

1. (घ) 2. (ख) 3. 1926 4. बुडापेस्ट

5. नीलहों के अत्याचार से बिहार के चम्पारण के किसान पस्त थे। 1916 में काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में चम्पारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल ने सबका ध्यान इस समस्या की ओर आकृष्ट किया। गाँधीजी, राजेन्द्र प्रसाद, मजरुल हक, जे॰बी॰ कृपलानी, नरहरि पारिख और महादेव देसाई के साथ 1917 में वहाँ पहुँचे और किसानों की हालत की विस्तृत जाँच-पड़ताल करने लगे। उन्हें गिरफ्तार कर जिला न्यायालय में मुकदमा चलाया गया। परन्तु बिहार सरकार ने कमिश्नर और जिला न्यायालय को यह आदेश दिया कि इस मुकदमे को वापस ले लिया जाए। किसानों के कष्टों की जानकारी हासिल करने के लिए एक जाँच समिति का गठन किया गया जिसके एक सदस्य स्वयं गाँधीजी थे। स्थानीय महाजनों और गाँव के मुखियारों ने भी गाँधीजी को काफी सहयोग दिया। परन्तु सबसे अधिक सहयोग किसानों और उनके स्थानीय नेताओं से मिला।

6. इटली और जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में आस्ट्रिया सबसे बड़ा बाधक है तथा इसे हटाये बिना जर्मनी का एकीकरण संभव नहीं है। अत: आस्ट्रिया से मुक्ति पाने के लिए उसे युद्ध में हराना जरूरी था। इसके लिए आवश्यक था कि जर्मनी सैनिक दृष्टि से मजबूत बने। विलियन प्रथम ने इसके लिए प्रशा की सैनिक शक्ति बढ़ाने की योजना बनाई। उदारवादियों के विरोध के बाद भी विलियम प्रथम ने सैन्य बजट बढ़ाया। विलियम प्रथम की इस नीति के कारण जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क ने "रक्त और लौह" की नीति का अवलम्बन किया जिससे जर्मनी का एकीकरण संभव हुआ।

7. रूसी क्रांति के दो प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) **निरंकुश राजतंत्र एवं भ्रष्ट शासन** : 1917 की क्रांति के पूर्व रूस में रोमानोव वंश का शासन था। इस समय रूस के सम्राट को 'जार' कहा जाता था। जार ने जो अफसरशाही बनायी थी वह अस्थिर, जड़ और अकुशल थी। वह दुर्बल और हठी स्वभाव का मन्द बुद्धि था। उसमें घटनाओं और व्यक्तियों के चरित्र को समझने की शक्ति नहीं थी। प्रशासन में भ्रष्टचार का बोलबाला था। फलस्वरूप जनता में असंतोष बढ़ता गया। प्रतिक्रियास्वरूप 1917 की क्रांति हुई।

(ii) **किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति** : रूस की अधिकतर जनता कृषक थी, परन्तु उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। किसानों की स्थिति अर्द्धदासों की तरह थी और उनपर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए थे। यद्यपि जार एलेक्जेंडर द्वितीय ने 1861 में कृषि दासता समाप्त कर दी थी, परन्तु इससे किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। अधिकांश किसान गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे थे।

8. फ्रांस द्वारा हिन्द-चीन को अपना उपनिवेश बनाने का प्रारंभिक उद्देश्य व्यापारिक सुरक्षा था। फ्रांस को डच एवं ब्रिटिश कम्पनियों के व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता था। भारत में फ्रांसीसी कमजोर पड़ रहे थे। चीन में उनका व्यापारिक प्रतिद्वंद्वी अंग्रेज थे। अत: व्यापारिक सुरक्षा के दृष्टिकोण से फ्रांसीसियों के लिए हिन्द-चीन अधिक सुरक्षित था, क्योंकि यहाँ से वे भारत और चीन दोनों जगहों को संभाल सकते थे।

A ONE LIFE SOLUTION

दूसरा उद्देश्य यह था कि औद्योगीकरण के लिए कच्चे माल की आपूर्ति उपनिवेशों से होती थी तथा उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार भी उपलब्ध होता था। यद्यपि वियतनाम एक कृषि-प्रधान देश था, परन्तु चीन से सटे राज्यों में खनिज संसाधन जैसे—कोयला, टिन, जस्ता, क्रोमियम आदि मिलते थे। इनका उपयोग फ्रांसीसी अपने उद्योगों में करना चाहते थे। वियतनाम में चावल और रबर का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होता था। फ्रांसीसियों का तीसरा उद्देश्य हिन्द-चीन में यूरोपीय सभ्यता का प्रचार-प्रसार कर वहाँ के लोगों को सभ्य बनाना था।

अथवा,

1857 के विद्रोह के बाद समाचार-पत्रों की प्रकृति का विभाजन प्रजातीय आधार पर हो गया। भारत में दो प्रकार के प्रेस थे—एंग्लो इंडिया प्रेस और भारतीय प्रेस।

इस अवधि में भारतीयों द्वारा प्रकाशित और संपादित पत्र भी थे। 1858 में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने **'सोम प्रकाश'** का प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में बंगला भाषा में प्रारंभ किया। यह समाचार-पत्र राष्ट्रवादी विचारधारा से ओत-प्रोत था। 1868 में मोतीलाल घोष के संपादन में अंग्रेजी-बंगला साप्ताहिक के रूप में **अमृत बाजार** पत्रिका शुरू हुआ। प्रेस के इतिहास में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह सरकार की नीतियों का तीव्र आलोचक था और जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय था। फलतः 1878 में लॉर्ड लिटन के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के पारित होने पर इस एक्ट से बचने के लिए रातो-रात इसका प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में होने लगा। 1881 में बाल गंगाधर तिलक के सम्पादन में मुंबई से अंग्रेजी भाषा में **मराठा** तथा मराठी भाषा में **'केसरी'** की शुरुआत हुई। ये दोनों पत्र उग्रवादी विचारों से प्रभावित थे। इन पत्रों का जनमानस पर व्यापक प्रभाव था। 1862 में एम॰जी॰ रणाडे ने **'इन्दु प्रकाश'** का प्रकाशन प्रारंभ किया था। मद्रास से 1878 में प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक समाचार-पत्र **हिन्दू** 1881 में दैनिक के रूप में परिवर्तित हो गया। यह पत्र उदार दृष्टिकोण का पोषक था। सच्चिदानन्द सिन्हा ने 1899 में अंग्रेजी मासिक पत्रिका **'हिन्दुस्तान रिव्यू'** की स्थापना की जिसका दृष्टिकोण राजनीतिक था।

9. (ख) **10.** (घ)

11. (i) भुज (ii) पटना (iii) स्थानिक

12. भारतीय कृषि की पाँच प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) **भारतीय कृषि की प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भरता :** भारतीय कृषि प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर है। देश में सिंचाई के साधनों की कमी के कारण कृषि मानसून पर निर्भर करती है। यदि वर्षा समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में हुई तो फसल अच्छी है अन्यथा नहीं।

(ii) **भूमि पर जनसंख्या की अत्यधिक निर्भरता :** भारत में कुल जनसंख्या के करीब 70 प्रतिशत लोग कृषि पर आश्रित हैं। इससे कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ गया है और कृषि-उत्पादन में जितनी वृद्धि होनी चाहिए थी उतनी नहीं होती।

(iii) **भारतीय कृषि की कम उत्पादकता :** कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, पुरानी पद्धति का प्रयोग, पूँजी की कमी, निम्न स्तर की तकनीक आदि के कारण अन्य देशों की तुलना में भारत की उत्पादकता बहुत कम है।

(iv) **कृषि उत्पादन में खाद्यान्नों की प्रमुखता :** चूँकि देश में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, अतः बढ़ती हुई जनसंख्या को खिलाने के लिए भारतीय कृषि में खाद्यान्नों के उत्पादन को ही प्रमुखता दी जाती है।

(v) **व्यावसायिक फसलों का कम उत्पादन :** भारत में खाद्यान्नों के उत्पादन के साथ कुछ व्यावसायिक फसलों, जैसे—कपास, गन्ना, तम्बाकू, तेलहन आदि का भी उत्पादन किया जाता है।

13. भारत में सड़कों का सबसे अधिक विकास उत्तर के विशाल मैदान में है जहाँ जनसंख्या अधिक है। यहाँ पर पक्की सड़कों के अनुपात में कच्ची सड़कें अधिक हैं। इसके विपरीत दक्षिणी पठारी भाग में पक्की सड़कों का अनुपात अधिक है। दक्षिणी भारत में सबसे अधिक सड़कें महाराष्ट्र तथा केरल राज्यों में हैं। उसके बाद तमिलनाडु, उड़ीसा तथा कर्नाटक का स्थान है। उत्तरी भारत में उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक सड़कें हैं। पूर्वी भारत में सड़कें कम पाई जाती हैं। पक्की सड़कों की सबसे कम लम्बाई वाला राज्य लक्ष्यद्वीप है जहाँ मात्र 01 किलोमीटर लम्बी पक्की सड़क है। सड़कों के घनत्व की दृष्टि से केरल प्रथम स्थान पर है। यहाँ प्रति 100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर 387 किलोमीटर लम्बी सड़क है। गोवा और उड़ीसा क्रमशः 258 एवं 152 किलोमीटर लम्बी सड़कों के साथ दूसरे एवं तीसरे स्थान पर है।

14. सोन नदी-घाटी परियोजना : सोन नदी-घाटी परियोजना बिहार की सबसे पुरानी और पहली परियोजना है। इसका विकास अंग्रेज सरकार ने 1874 में सिंचाई के लिए किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस परियोजना को नया रूप दिया गया और इसे बहूद्देशीय परियोजना में बदल दिया गया। इसके

AAONLINE-SOLUTION

अन्तर्गत 1874 में सर्वप्रथम डेहरी में सोन नदी पर अवरोधक बाँध बनाकर जल को रोका गया और पूर्व तथा पश्चिम दिशा में दो नहरें निकाल कर सिंचाई की सुविधा प्रदान की गई। फलतः इस क्षेत्र को बिहार का 'धान या चावल का कटोरा' कहा जाने लगा है।

कोसी नदी-घाटी परियोजना : कोसी नदी-घाटी परियोजना की कल्पना 1896 में किया गया था। परन्तु वास्तविक रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1955 में कार्य प्रारंभ हुआ। यह परियोजना नेपाल सरकार, भारत सरकार तथा बिहार राज्य की सामूहिक प्रयास का प्रतिफल है। इस परियोजना के अन्तर्गत अवरोधक बाँध, तटबंध, जलाशय, नहर इत्यादि का निर्माण किया गया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य नदी के बदलते मार्ग को रोकना है। यह परियोजना बिहार के लिए वरदान सिद्ध हुई है। इससे बाढ़ की विभीषिका कम हुई है।

15. भारत का लोहा-इस्पात उद्योग अत्यंत प्राचीन है। आधुनिक रूप में भारत में लोहा-इस्पात उद्योग को स्थापित करने का प्रथम प्रयास 1779 में किया गया था। 1808 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मद्रास में एक लोहे का कारखाना स्थापित किया। 1907 में साकची (वर्तमान झारखण्ड) नामक स्थान पर जमशेदजी टाटा द्वारा एक आधुनिक कारखाना 'टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी' **टिस्को** नाम से स्थापित किया गया। इस उद्योग को लोहा-इस्पात उद्योग में विशेष सफलता मिली। 1908 में आसनसोल के निकट हीरापुर में भारतीय लोहा-इस्पात कम्पनी के नाम से एक अन्य कारखाना स्थापित किया गया। इस प्रकार भारत में आधुनिक ढंग से लोहा-इस्पात उद्योग बीसवीं शताब्दी में ही स्थापित हुआ।

इस समय भारत 328 लाख टन इस्पात का निर्माण कर विश्व में कच्चा इस्पात उत्पादकों में नवें स्थान पर है। यह स्पंज लौह का सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति इस्पात की खपत केवल 32 किलोग्राम है।

भारत में कच्चा माल (लौह धातु) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। झारखण्ड, उड़ीसा, गोवा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं कर्नाटक में लोहा पाया जाता है। उत्तम कोकिंग कोयला झारखण्ड तथा घटिया कोयला मध्य प्रदेश में मुख्यतः पाया जाता है। चूना-पत्थर मध्य प्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा एवं कर्नाटक में बड़ी मात्रा में मिलता है। मैंगनीज भी इन्हीं राज्यों में मिलता है। ये सुविधाएँ पश्चिमी बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश एवं कर्नाटक में मिलती हैं। अतः इन्हीं राज्यों में इस्पात उद्योग विकसित हुआ है।

अथवा,

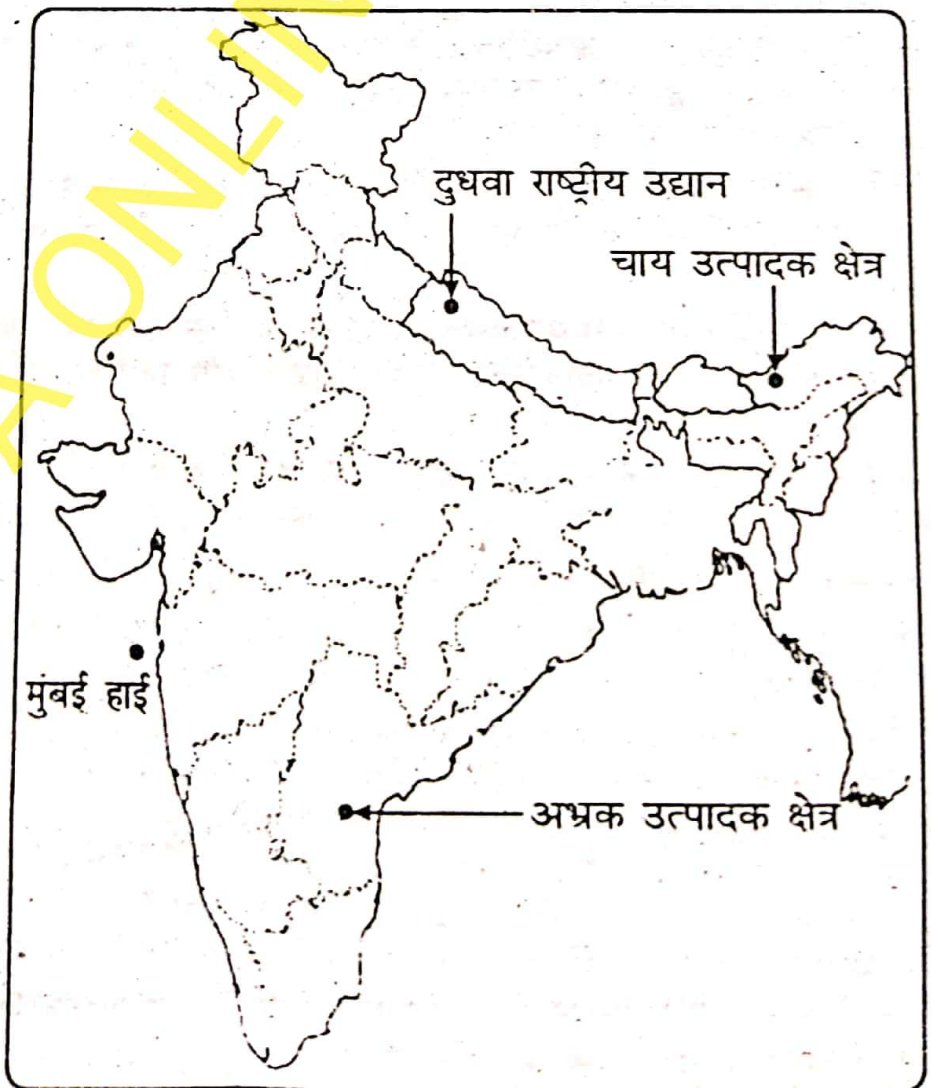

A A ONLINE SOLUTION

अथवा,

आज भारत की अधिकांश नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं। क्योंकि भारत में प्राय: नगर एवं कल-कारखाने नदियों के किनारे ही अवस्थित हैं। इन नगरों के लोगों के मल-मूत्र और कल-कारखानों के अपशिष्ट पदार्थों को नदियों में ही गिरा दिया जाता है जिससे नदियाँ प्रदूषित हो गयी हैं।

16. (घ) **17.** (क)

18. ग्राम पंचायत के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं—

मुखिया : प्रत्येक ग्राम पंचायत का प्रधान मुखिया होता है। मुखिया की सहायता के लिए एक उप-मुखिया का पद सृजित किया गया है।

ग्रामसभा : यह पंचायत की व्यवस्थापिका सभा है। पंचायत क्षेत्र के अन्दर रहनेवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष जिनकी उम्र 18 वर्ष से कम नहीं है, इसके सदस्य होते हैं।

ग्रामरक्षा दल : यह गाँव की एक पुलिस व्यवस्था है। गाँव के 18 वर्ष से 30 वर्ष तक की आयु वाले युवक इसके सदस्य हो सकते हैं।

ग्राम कचहरी : यह ग्राम पंचायत का न्यायालय है। यह ग्राम पंचायत के अन्तर्गत न्यायिक कार्यों को देखता है।

19. लोकतंत्र जनता का, जनता के द्वारा तथा जनता के लिए शासन है। यह लोकतंत्र की सर्वमान्य परिभाषा है जो अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने दिया था। लोकतांत्रिक शासन के अन्तर्गत जनता अपने बहुमूल्य वोट देकर अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं। चुने गये प्रतिनिधियों के द्वारा सरकार का गठन किया जाता है। जिस राजनीतिक दल के सर्वाधिक प्रतिनिधि चुने जाते हैं। उनकी सरकार बनती है। पराजित राजनीतिक दल विरोधी की भूमिका निभाते हैं। ये विरोधी दल सरकार को निरंकुश होने से रोकते हैं। लोकतंत्र में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका एक-दूसरे पर नियंत्रण रखते हैं। इस शासन-व्यवस्था में सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होता है।

20. भारत की विधायिका में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत ही कम है। लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या कुल सदस्यों की ग्यारह फिसदी तक भी नहीं पहुँच पाई है। विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। भारत महिला प्रतिनिधित्व के मामले में अफ्रीका और लातिन अमेरिका के विकासशील देशों से भी पीछे है। भारत के लोकसभा में महिला प्रतिनिधियों की संख्या 59 हो गई है।

21. 2011 (A) के प्रश्न-संख्या 25 का उत्तर देखें।

अथवा,

सन् 1974 ई॰ में बिहार में बेरोजगारी और भ्रष्टाचार अपने चरम सीमा पर पहुँच गई थी। राज्य में खाद्यान्न की भारी कमी हो गई थी जिसके कारण उनके कीमत आसमान छू रहे थे। इन्हीं समस्याओं से जूझते हुए बिहार के छात्रों ने बिहार सरकार के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया। उस समय राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार दोनों काँग्रेस पार्टी की थी। बिहार के छात्रों ने लोकनायक जयप्रकाश को अपने आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व का यह आन्दोलन बिहार समेत गुजरात राज्य में भी भड़क गया। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में विपक्षी दलों ने तत्कालीन इंदिरा गाँधी के सरकार की इस्तीफे की माँग करने लगे। इस आन्दोलन से घबराकर श्रीमती गाँधी ने 1975 में आपातकाल की घोषणा कर दी। आपातकाल के 18 महीने बाद लोकसभा का चुनाव हुआ और जनता पार्टी की जीत हुई। 1977 में जनता पार्टी की सरकार का गठन हुआ।

22. (ग) **23.** (ख)

24. अर्थव्यवस्था एक ऐसा तंत्र या ढाँचा है जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाएँ सम्पादित की जाती हैं, जैसे—कृषि, उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, बीमा, परिवहन तथा संचार आदि। ये आर्थिक क्रियाएँ एक ओर विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ एवं सेवाओं का संपादन करती हैं और दूसरी ओर लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं ताकि वे अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए देश में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय कर सके। अत: अर्थव्यवस्था आजीविका अर्जन की एक प्रणाली है।

25. किसी देश की कुल राष्ट्रीय आय को जब देश की कुल जनसंख्या से भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे प्रति व्यक्ति आय कहते हैं। प्रति व्यक्ति आय किसी भी देश के आर्थिक विकास का परिचायक है। प्रति व्यक्ति आय वृद्धि होने से देश की कुल राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है तथा जीवन-स्तर ऊँचा होता है।

A ONLINE SOLUTION

26. हमारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा के मुख्य लाभ निम्नांकित हैं।

(i) **उपभोक्ता को लाभ :** मुद्रा के रूप में आय प्राप्त होने पर कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार उसे खर्च कर सकता है। मुद्रा के द्वारा क्रय-शक्ति ऐसे रूप में होती है जिसका हम जिस प्रकार चाहें, उपयोग कर सकते हैं।

(ii) **उत्पादकों को लाभ :** उत्पादकों को भी मुद्रा से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। मुद्रा के प्रयोग से ही आज बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ है। उत्पादकों को मुद्रा के द्वारा उत्पादन के विभिन्न साधनों को जुटाने, कच्चा माल खरीदने, श्रमिकों को पारिश्रमिक देने तथा पूँजी उधार लेने में बहुत आसानी हो गई है।

(iii) **विनिमय के क्षेत्र में लाभ :** मुद्रा के आविष्कार से वस्तु-विनिमय प्रणाली की सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं। मुद्रा विनिमय का सर्वमान्य साधन है।

(iv) **वितरण के क्षेत्र में लाभ :** वर्तमान समय में वस्तुओं का उत्पादन कई साधनों के सहयोग से होता है। उत्पादन के विभिन्न साधनों की सीमांत उत्पादकता को मापने का कार्य मुद्रा के द्वारा ही होता है। इन साधनों का पुरस्कार या पारिश्रमिक भी मुद्रा के रूप में दिया जाता है। इस प्रकार, मुद्रा राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायता करती है।

(v) **राजस्व के क्षेत्र में लाभ :** मुद्रा से राजस्व के क्षेत्र में भी बहुत सहायता मिलती है। सरकार करों के रूप में जनता से आय प्राप्त करती है और इसे लोककल्याण के कार्यों पर खर्च करती है। मुद्रा के प्रयोग से ये दोनों ही कार्य सरल हो जाते हैं।

27. स्वयं-सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्र में एक समान सामाजिक, आर्थिक स्तर के 15-20 व्यक्तियों का एक अनौपचारिक समूह होता है जो अपनी बचत तथा बैंकों से लघु ऋण लेकर अपने सदस्यों के पारिवारिक जरूरतों को पूरा करते हैं और विकास गतिविधियाँ चलाकर गाँवों का विकास और महिला सशक्तीकरण में योगदान करते हैं। स्वयं-सहायता समूहों की स्थापना महाजनों के शोषण से गरीब जनता को बचाने तथा उन्हें सस्ती दरों पर ऋण प्रदान करने के लिए गाँवों या कस्बों में की गई। स्वयं-सहायता समूहों के लिए रकम प्राप्त करने के दो मुख्य स्रोत हैं—(i) सदस्यों की बचत तथा (ii) बैंकों से ऋण।

स्वयं-सहायता समूह केवल अपने सदस्यों को ही ऋण देता है। यह समूह ऋण देने, ऋण की रकम एवं उद्देश्य, ऋण पर ब्याज, भुगतान की अवधि इत्यादि के संबंध में निर्णय लेता है। इस प्रकार स्वयं-सहायता समूह महिलाओं के लिए एक वरदान के समान है जिनके द्वारा उन्हें अपनी प्रगति का साधन प्राप्त होता है। यह स्व-रोजगार का सृजन करने में भी मददगार होता है।

अथवा,

बिहार के आर्थिक जीवन पर वैश्वीकरण का निम्नलिखित कुप्रभाव पड़ा है—(i) वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योगों की उपेक्षा हुई है। (ii) वैश्वीकरण के कारण बिहार के कुटीर एवं लघु उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। (iii) वैश्वीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा निर्मित वस्तुओं के आयात के कारण बहुत सारी उत्पादन इकाइयाँ बंद हो गईं जिसके फलस्वरूप रोजगार पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। (iv) बिहार में आधारभूत संरचना की कमी के कारण यहाँ पूँजी निवेश बहुत कम हुआ है।

28. (ग) **29.** (क)

30. बिहार भारत का सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित प्रदेश है। सम्पूर्ण बिहार का 73 प्रतिशत तथा उत्तर बिहार का 76 प्रतिशत इलाका बाढ़ प्रभावित है। बिहार की कुल आबादी की 6 करोड़ जनता बाढ़ से प्रभावित है। बिहार में बाढ़ की समस्या केवल राज्य एवं देश की ही समस्या नहीं है बल्कि यह अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जिसका समाधान नेपाल के सहयोग के बिना संभव नहीं है। उत्तर बिहार से होकर बहने वाली अधिकांश नदियों के उद्गम स्थल नेपाल एवं तिब्बत में हैं। इन नदियों का जल ग्रहण क्षेत्र नेपाल एवं तिब्बत में 61 प्रतिशत तथा बिहार में 39 प्रतिशत है। ये नदियाँ पहाड़ों से जब उत्तर बिहार के समतल मैदानों में आती हैं तो अपने साथ बाढ़ की विभीषिका भी लाती हैं। बाढ़ की समस्या बिहार की नियति बन चुकी है। हिमालय से निकलने वाली नदियों की एक शृंखला है जिनमें से कुछ बड़ी नदियाँ हैं और अधिकतर छोटी नदियाँ हैं। छोटी नदियाँ कम जल से भी उफला जाती है और बाढ़ की स्थिति पैदा कर देती है। एक समय कोसी नदी को 'बिहार का शोक' कहा जाता था। परन्तु केन्द्र सरकार के सहयोग से नेपाल सरकार से समझौता हुआ और हनुमाननगर में एक ऊँचा बाँध और बराज बना। फिर भी 2008 में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि बाँध-बराज से सम्बद्ध कुसहा नामक स्थान पर पानी का इतना दबाव बढ़ गया कि वह टूट गया। फलतः कोसी नदी की अनेक धाराएँ बन गईं और वह सौ किलोमीटर पूरब तक खिसक गई। बाँध की मरम्मत में बिहार सरकार असहाय थी।

MAA ONLINE SOLUTION